स	तिनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।	
<u> </u>	ज्ञान स्वरोदय	स्त
सतनाम		सतनाम
	दरिया अगम गम्भीर है, लाल रतन की खानि।	
सतनाम	जो जन मिलै जौहरी, लेहि शब्द पहचानि।।	सतनाम
	, , , ,	<del>=</del>
	कहो स्वरोदय ज्ञान यह, कमल मानसर फूल।।	
सतनाम	चौपाई	<b>생</b> तनाम -
诵		' '
_	ज्ञान-स्वरोदय कहेऊ कबीरा। अपर साधु निजु ज्ञान गम्भीरा।२	
सतनाम	साहब मम अन्तर गति जानी। बोले बिहँसि मधुर मृदु बानी।३	1 71
		`
E	आदि अन्त मध्य तुम्ह जानी। निर्गुण सर्गुण सत सहिदानी।५	
सतनाम	बाहर भीतर देहु दिखाई। जीव दृढ़ होय भिक्त मन लाई।६	1-4
"	मिराट विकार सुनुष्ठि गर्न सार्चा गांत जावाचन र टाइन्ट	'
तनाम	चिन्है सतगुरु लेहिं मुक्ताई। लोक जाय जीव यम न खााई। ८ साखी - २	। सत्न
सत	अन्तर गति मम जानि के, कर्ता आयसु दीन्ह।	ם
	ज्ञान-स्वरोदय ग्रन्थ मम्, तबहिं आरंभन कीन्ह।।	
सतनाम	चौपाई	सतनाम
 태	र अजर नाम गुण सत्ता कर्त्तारा। धन साहब तुम सिरजनिहारा। <del>६</del>	ᅵᆿ
<b>I</b> .	। । धन साहब तम अद्भात करनी। अविगति महिमा सकों न बरनी। १८	
सतनाम	विधि शिव शेष शारदा डरहीं। नाम अमोल मोल को करहीं। १९	114
내	। असी लाखा पैगम्बर आवा। बेकीमति कर अन्त न पावा।१२	
	। धन मनगर धनिधि कन्दासा आस जगन जीन करिं स्वास १९३	
सतनाम	नाम भानु सत्ता कोटि प्रकाशा। नयन विहूनहिं कौन विलासा।१४	
	सो साहब भौ सतगुरु मोरा। गौ दोविधा भव नैन ॲंजोरा।१५	
 E	आपुहिं हुकुँम दीन्ह मोहिं जानी। दरिया ज्ञान स्वरोदय बखानी।१६	설
सतनाम		- सतनाम
स	ातनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म
	साखी – ३	
Ή	उर लोचन मगु देखिके, हाजिर हाल हजूर।	सत
सतनाम	प्रगट प्रताप नाम कर, प्रेम भक्ति बिनु दूर।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	चिन्हु न सतगुरु देखि पराहू। का मद माया विषौ रस खाहू।१७।	सतनाम
सत	यह संसारमाया कलवारी। मदे मताय भर्म करि डारी।१८।	1-41
	खां जहु सतगुरु प्रेम समोई। उज्जवल दशा हंस गुन होई।१६।	
नाम	मुरुचा मकुर सिकिल करु नीके। तजि छल कपट साफ करु हीयके।२०। नाम निशान देखा निज पलके। जगमग ज्योति झलामलि झलके।२१।	쐽
Ή		뢰
	उर अन्दर जब होय उजियारा। बरे ज्योति दिल निर्मल सारा।२२।	
तनाम	मित करु जोर जुलुम जग माहीं। निज स्वारथ रत यह भल नाहीं।२३। भूलहू जीव बध जिन करहू। ओएल के वोएल जानि परिहरहू।२४।	स्तन
ᄺ	साखी - ४	ョ
F	जस प्यार जीव आपना, तस जीव सबहीं प्यार।	세
सतनाम	जानहिं सन्त सुबुद्धि जन, जिनके विमल विचार।।	सतनाम
	सोरटा - 9	
] 크	मकुर मैलि नहिं होय, दिल चश्मा कहँ साफ करू।	सत्-
सतनाम	सब घट एके सोय, महल महरमी होए रहे।।	11
	चौपाई	
नाम	निज जीव सम सब जीव जग माहीं। जानहिं साधु ज्ञान जेहि पाहीं।२५।	सतनाम
सतनाम	मति करु खून पिवै जिन दारु। गर्व गरुरि दूरि करि डारु।२६।	ᆲ
	मोह माया मद तेजहु विकारा। करहु भिक्त सतगुरु गुण सारा।२७।	
सतनाम	जौं तुम चहिस मिदप संग बासा। आए पिवो मद मय बिनु कासा।२८।	सतनाम
됐		1-1
	मंजन जलनिधि संगम गंगा। सत सुकृत को उठे तरंगा।३०।	
सतनाम	करु स्नान विमल मन होई। बारु दया दिल दीपक सोई।३१। कब तक दोजक आँच से डरहू। भर्म से बिहिश्त भरोसा करहू।३२।	सतनाम
[ 지	क्षा तक दालक जाय स इरहू। नन स विक्रित नरासा करहू।३२। साखी - ५	표
ᄪ	बिनु माशूक का आस की, एहि दोजक की आँच।	세
सतनाम	मिलि रहना महबूब से, सोइ बिहिश्त है साँच।।	सतनाम
	2	<b>퓌</b>
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	 ]म
	चौपाई	
सतनाम	नबी महम्मद दीन पैगम्बर। कहा खूब समुझहु दिल अन्दर।३३। गुजर गरीबी बुजुरुग होई। फक्का फकर फकीरा सोई।३४।	섥
सत	गुजर गरीबी बुजुरुग होई। फक्का फकर फकीरा सोई।३४।	긜
	राज किया दुःख काहु न दीन्हा। लेकर करद जबह नहिं कीन्हा।३५।	- 1
सतनाम	खाून खाराब मना सब कियऊ। पहिलहिं इब्राहिम से भायऊ।३६। तेहि कुल जन्म लीन्ह उन्हि आई। निज कर बिस्मिल्ल कीन्ह न भाई।३७।	섬
<u> </u>	तेहि कुल जन्म लीन्ह उन्हि आई। निज कर बिस्मिल्ल कीन्ह न भाई।३७।	
	जो तुम्ह उमत महम्मद अहहू। मानहु बचन दीन में रहहू।३८।	
सतनाम	का माया मद पियहु दूकानी। तिज अमृत विष अँचवहु जानी।३६। पियहु नाम मद असल करारा। रहहु मस्त कल्पन्हि मतवारा।४०।	석기
	पियहु नाम मद असल करारा। रहहु मस्त कल्पन्हि मतवारा।४०।	🗏
	साखी – ६	١.
सतनाम	एहि भव शोक संताप बहु, निकल सिताबी आव।	सतनाम
내	माया काँट अति कठिन है, अब जिन करु फैलाव।।	표
Ļ	चौपाई	세
सतनाम	एह भव सिन्धु रक्त सब खाई। भाँवर तरंग धार कठिनाई।४१। जीवहि बोहाय चकोह धमावै। बिना जहाज पार किमि पावै।४२।	
		'
E	त्रिगुण त्रिविध धार अति बाँकी। बूड़ि मुए भव सब पौराकी।४३।	   
सतनाम	<b>9</b> -	सतनाम
"	करिंहु नाम सरपर मह बासा। माता मुक्ता साप गुण दासा १०४१	
틸	द्रव्य हो न हित फिरहु उदासी। यह माया कहु का कर दासी।४६।	섥
सतनाम	माया काहू की भई न होनी। नेक नाम गुण रहि गौ छोनी।४७।	
	नेक नाम जग जो तुम चहहु। जोर जुल्म सबसे परिहरहू।४८। साखी - ७	
सतनाम	साखा - ७ बदी जालिम जो करे, यह काफर को काम।।	सतनाम
सत	नेक मर्द डरता रहे, जाने अल्लह कलाम।।	늴
	चौपाई	
सतनाम	वापाइ  खास खोदाय नबी से बरनी। धृग जीवन जग जालिम करनी।४६।	सतनाम
	पिवै शराब खाून करि खाई। लानत नबी देहु तेहिं जाई।५०।	
सतनाम	निज मुख कृष्ण सो कहा बखानी। जीव दया गीत महँ जानी।५२।	सतनाम
~	3	<b>ਜ</b>
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_ ाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	<u>ा</u> म
L	सो तिज पण्डित दुर्गा पाठा। मचा सकल जग अवघट घाटा।५३	- 1
सतनाम	जीव बध महा पाप अति भारी। पण्डित जानु न कहे विचारी।५४ जीवन जन्म धृग पण्डित केरा। आवहु सतगुरु शरण सबेरा।५५	           
걟	जीवन जन्म धृग पण्डित केरा। आवहु सतगुरु शरण सबेरा।५५	니킓
	जो तोहिं खून साँच मन भावा। करहु खून हम तुमहिं बतावा।५६	ı
सतनाम	साखी - ८	सतनाम
걮	ज्ञान खड़ग दृढ़ के गहो, कामादिक भट मारि।	ם
	पांच पचीसिहं जीति के, कर्म भर्म सब झारि।।	
सतनाम	सोरठा - २	सतनाम
堀	ज्यों चाहिस मदपान, रहहू बेहोश भव शोक से।	ם
L	तिज पाखण्ड अभिमान, नाम अमल माता रहे।।	
सतनाम	चौपाई	सतनाम
ᅰ	जौ तुम नाम अमल सुचि चहहू। मिले तबहिं सतगुरु पद गहहू।५७	ا ا⊒
	प्रेम प्रीति से देहिं पियाई। करै कैफ दिल रौशन भाई।५८	
सतनाम	दिन दिन अधिक मस्त सरसारा। रहे सो कल्प कोटि मतवारा।५६	_         
<b>레</b>	महा प्रलय की डर नहिं आवै। जा कहं सतगुरु ढारि पिलावै।६०	ᅵᆿ
	बैठिहं साधु सन्त जेहिं बारी। यार मिलन की सो फुलवारी।६१	1
तनाम	चुनहिं फूल अधिक रुचि जाहाँ। दास भाव करि बैठहुँ ताहाँ।६२	।     
# # 대	शाकी सतगुरु प्रेम प्याला। जो जेहिं लायक तेहिं तस ढाला।६३	ᅵᆿ
╠	नाम ज्ञान मद देहिं मताई। कैफ से दिल ॲंजोर होय जाई।६४	١
सतनाम	साखी – ६	सतनाम
*	छत्र फिरे सिरे मिन बरे, झलके मोती श्वेत।	4
l ∓	कहें दरिया दर्शन सही, गुरु ज्ञानी का हेत।।	4
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	ताहि बाटिका कर तैं माली। भूलि परा भव भर्म कुचाली।६५	٦
E	तैं तेहि बन का अहसि पखेरु। यहाँ आय भौ यम कर चेरू।६६	 설
सतनाम	हरा तुम्हारा सुमन बगीचा। भूले तुम आपन दिल हींचा।६७	   सतनाम 
"	नव बहार है बग तुम्हारा। भर्म कर्म में भूलि बिसारा।६८	
E	अब सतगुरु पद परसहु आई। दया दृष्टि करि देहिं लखाई।६६	   
सतनाम	यार मिलन की जो फुलवारी। दरसे देखाहु दृष्टि पसारी।७०	   सतनाम 
	4	
स	तिनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	ाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u></u>  म
	मुलाकात करु तेग प्रहारू। शोक जुदाई मारि निकारू।७१।	
<u> </u>	पियहु अघाय नाम मद भारी। मिटे माया मद सकल खुमारी।७२।	सतनाम
सतनाम		불
	प्रेम प्याला पाइके, तन मन डारहु वारि।	
सतनाम	होइ बेहोश जग से रहो, ज्ञान स्वरोदय विचारि।।	सतनाम
_ ਜ਼ਰ	चौपाई	-
	होहि बेहोश मस्त मतवारा। छूटि जाय भव रुज परिवारा।७३।	
सतनाम	माया बिलगि की शोक न आवै। यार मिलन की माया न भावै।७४। यह भव जरा मरन को देशा। छोड़ि देहु जीव कठिन कलेशा।७५।	स्तन
Ή	9	
	अक्षय वृक्ष छपलोक निनारा। तैं बिहंग ते द्रुम की डारा।७६।	- 1
सतनाम	भाव सागर में परहु भुलाई। चेतहु तबिहं भाला है भाई।७७। का सख यह मर्दा कर गाऊँ। मिर मिर जन्म होय जेहिं ठाऊँ।७८।	सतन
판		
_	जो न अक्षय बट नामहिं जाना। यह भव सुख निज स्वप्न समाना।७६।	
सतनाम	कहें दरिया रहु सतगुरु शरना। अवश्य एक दिन आखार मरना।८०।	सतनाम
  판	साखी – ११	ㅂ
  ⊾	दुःखे सुखे दिन काटिये, धूपे रहिये सोय।	세
सतनाम	तातर आसन कीजिये, जो पेड़ पातरो होय।।	सतनाम
	વાપાફ	
E	इमि रसूल से रब किह दीन्हा। यह जहान पैदा हम कीन्हा। ८१।	쇠
सतनाम	करे बन्दगी सब दिन मेरा। सुनहु दोस्त सब उम्मत तेरा।८२।	
	लिखा नबी कोरान में आयत्। मेरी उम्मत करो हकताएत। ८३।	
सतनाम	करहु बन्दगी असल करारा। सो तिज का तुम्ह मकर पसारा। ८४।	सतनाम
सतन	अलफी गुदरी सेली डारी। पीर कहावहू दर्द बिसारी। ८५।	111
	माला कंठी तिलक बनावै। बुत पूजे कोई शंखा बजावै। ८६।	- 1
सतनाम	नाना पाखाण्ड भोष सँवारा। गुरु कहावहिं एहि संसारा।८७।	सतनाम
सत	गर्व गुमान करे मगरूरी। एहि नहिं हो इहैं बन्दगी पूरी।८८।	크
	साखी - १२	
सतनाम	सरिकत तरिकत मारफत, कहै हकीकत जानि।	सतनाम
됐	दर्द राखै दरवेस है, करै विहिश्त पहिचानि।।	ם
   	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_  म
	The state of the s	

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	 ाम
	चौपाई	
E	मकर बन्दगी छाडु सबेरा। निहं राजी होय साहब मेरा।८६	   설
सतनाम	मकर बन्दगी छाडु सबेरा। निहं राजी होय साहब मेरा।८६ एहि बन्दगी से निहं बड़ाई। हरगिज बहिश्त मिले निहं भाई।६०	<del> </del> 필
	दोजक आँच सहै अति भारी। मकर बन्दगी देहु बिसारी। ६१	ı
E	पाखाण्ड से प्रभु मिलै न काहू। कहों सुभाव साँच पतियाहू।६२	섥
सतनाम	पाखाण्ड से प्रभु मिलै न काहू। कहों सुभाव साँच पतियाहू।६२ बरबस पाखाण्ड करहु बनाई। द्रव्य हरहु सब जगत रिझाई।६३	] ∄
	पाखाण्ड कर्म सभो बिसरावहु। सुनहु न श्रवण टारि बहलावहु। ६४	1
   	गफलत रूई कान महँ तेरे। का दे राखा निकालु सबेरे। ६५ मकर बन्दगी करि दुःखा होई। छोड़ दे मकर फकर है सोई। ६६	4
सतनाम	मकर बन्दगी करि दुःखा होई। छोड़ दे मकर फकर है सोई। ६६	ᅵ큄
	साखी - १३	
सतनाम	दरबेसा दिल दर्द है, दरबेसा दरबेस।	सतनाम
H 표	दरबेसा दिल सवुर है, दरबेसा नहिं भेस।।	큠
	चौपाई	
सतनाम	असल बन्दगी साधुन्हें जाना। यारी मिलन की बाग अमाना। ६७	- - - -
표	साँच बन्दगी सन्तिन्ह केरा। मस्त सो मगन गगन में डेरा।६८	<sub>ا</sub> ا⊒
	तहाँ जाय बैठहु तुम भाई। आशिक फूल चुनहिं जेहि ठाई।६६	
तनाम	पहिले दिल से दोविधा टारो। गर्व गरुरि दूरि करि डारो।१००	। सित्न
ᅰ	मरना से पहिले मिर रहहू। असल जो हद है जो तुम चहहू।१०१	ı │ <sup>∄</sup>
_	जियतिहं मुर्दा होय तब रहना। अवश्य तबिहं तुम पारा कहना।१०२	ال
सतनाम	जेहि विधि पारा मरा न मारा। मलकल मौत सो करै विचारा।१०३	17
	कहै फिरिश्तिहं से अस बरनी। पारा अमर हुआ केहि करनी।१०४	"
l ≖	साखी - १४	샘
सतनाम	निकट जाय यमराज निहंं, सिर धुनि यम पछताय।	सतनाम
	बूँद सिन्धु में मिल रहा, कौन सके विलगाय।।	"
巨	चौपाई	섴
सतनाम	पाँच पचीस तीन करि रीती। मन कहँ अँवटि सबिन्ह कहँ जीती।१०५	
ľ	अनलहक वोए कहै पुकारी। है तेहिं लायक सो अधिकारी।१०६	
सतनाम	कहे जो वह मैं हों भगवाना। तो तेहिं कहै न ताजुब माना।१०७	सतनाम
सत्र	अग्नि में जाए काठ जो परई। जरिकै अग्नि होय सी बरई।१०८	<del> </del> 1
	6	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	ाम

4	सतनाम सतनाम सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
L	भयऊ अदग सो लाल अँगो				
IĘ	को अब काठ कहे तेहि अ कि कवनो जल समुद्र में परइ	ाई। चीन्ह	हे कौन क	गठ तेहि भाइ	र् १११०। द्व
4	हिका अब काठ कहे तीहे अ हिकारी जल समुद्र में परइ	ी दूजा	नाम नहि	इं कोई धरइ	र् । १ १ १ । 🛓
L	सब कोई जाने सिन्धु अपा				l .
E	म् ए ए स्रेंड निकट नहिं	साखी - प	) <u>Y</u>		स्त
44	सिंह निकट नहिं	आवहिं, क	रि सियार सं	ो प्रीति।	स्तनाम
	 साधु सिंह मत <sup>्</sup>				
ᆌ	स्या <u>नाम</u> अने स्टेन संवर्धन	चौपाई			# 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한 대한
H	हि कहा भोद यह गहिर गंभीर	•	करार अ	सल रंग हीर	1 1993 기불
					ا ۱۹۹۷
I I I I	म् गोप भोद से जोहे गोमे हो। हिंदेखाहु कोरान पुराण विचारी				
lk	है । इस मुश्किल यह पारखा के				
<b>l</b> .					.
	हिएसा कला अनूपम साई। हिम्मार्गिय गुमान भरा दिल तेरा।			•	
<b>I</b>	हिंगप गुनाग नरा विलासरा   मुरुचा जाहि मुक्रुर में लाग				
_					
	म्ह जैसे भानु तेज प्रकाशा। न	•		५७। समारा।	1
B		साखी - १	,	<del></del>	$\ \vec{\mathbf{H}}\ $
╽	है मगु साफ				4
	कौन दोष मगु भ	_	पनाह सूझत	नाहि ।।	सतनाम
		चौपाई	<u>،</u> د		
E	नहिं सूर्य अँधरहिं दिखलावे		•		
सतन	दगा कीन्ह परनाम गरूरी				I ==
	हवा  हारस कामादिक जता			•	।।७५३।
 E	ब्रह्म साफ जैसे धुव तार संत सिकिलिगर खोजहु जाई				120
सतन	हिं संत सिकिलिगर खोजहु जाई				११२५। 🖆
ľ	िटिल ऐना होए साफ तम्हारा।	दिन दिन	न अधिक	ज्योति उजियार	⊺ । १२६ ।
] ]	ऐना सिकिल साफ जो करहू हितन मन से जिन्हि सिकिल क	। तौ एहि	मगु पगु	मोहकम धरह	११२७।
सत्	<b>  ूँ</b> तन मन से जिन्हि सिकिल क	राई। सहि	ह संकट ह	ोए साफ सफाः	ई 19२८ । 葺
_		7			
7	सतनाम सतनाम सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

स्	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम
Ш	साखी - १७	
틸	पहिले गुर शक्कर हुआ, चीनी मिश्री कीन्ह।	섥
सतनाम	मिश्री से तब कन्द भौ, एही सोहागिन चीन्ह।।	सतनाम
Ш	चौपाई	
E	जैसे बीज जमी महँ परई। खाक में मिलि खाक सिर धरई।१२६	; I
सतनाम	कछु दिन बीते सो अँकुराना। मैलि छुटा भूसा बिलगाना।१३०	सतनाम
Ш	जीव साफ होय भौऊ निनारा। बीज एक से भौउ हजारा।१३१	1
E	ऐसी सिकिल जाहि बनि आई। फेरि मुरचा नहिं लागे भाई।१३२	: 기섥
सतनाम		
Ш	है दोनहू कर एक प्रभाऊ। कहौं सो ताकर सुनहु सुभाऊ।१३४	
सतनाम	आगे धरि देखों जो कोई। दुइ सत योजन दीसे सोई।१३५	ובו
सत	होय साफ दिल निकट नगीना। काह सिकन्दर कर वह आईना।१३६	. 니킖
Ш	साखी - १८	
सतनाम	कहाँ जाम जमशेद है, काह सिकन्दर ऐन।	सतनाम
재	दिल चश्मा सब ऊपरै, अविगति सूझत नैन।।	ᡜ
Ш	चौपाई	
크	अंजन कहों आंखाि कर भाई। दीदम जासो होय सफाई।१३७ दिल करु दीप ज्ञान करु तेला। इश्क राख्यु दिल बदी सकेला।१३८	   석 
ᅰ	दिल करु दीप ज्ञान करु तेला। इश्क राखु दिल बदी सकला।१३८	;
Ш	आशा एक नाम सत धरहु। तामें दोविधा सब परिहरहू।१३६	
सतनाम	प्रेम सुरति बाती करु नीके। सत चिनिगी लै बारहु हीय के।१४०	
	निज दिल दीपक रौशन करहू। सो धुँआँ नैनहिं अनुसरहू। १४९	
	लोचन विमल होय जब तोरा। अंधपट मिटै होय अंजोरा।१४२ यह सुरमा महँ है गुण भाई। सो बिनु सतगुरु काहु न पाई।१४३ स्वर्ग नर्क की सुधि बिसरावे। जियर्तीहं मरे तबहिं बनि आवै।१४४	
निम	यह सुरमा मह ह गुण माइ। सा । बिनु सतगुरु काहु न पाइ।१४३	सतनाम
<b>4</b>	साखी - १६	ച
	साखा - ७६ एकै ब्रह्म सबे घट, जहाँ देखु तहँ एक।	ام ا
सतनाम	हृदय कमल उजियार भौ, करहु सरोद विवेक।।	सतनाम
ᄺ	चौपाई	크
		ואו
सतनाम	इंगला बाम चन्द्र करु बासा। पिंगला दाहिने भानु प्रकाशा। १४६	1211
	8	.  म
स		 नाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	<u>ा</u> म
	ताके मध्य सुखामना अहई। चले सो दोनो स्वर में लहई।१४७	
표	पाँच तत्व तहँ करे निवासा। अग्नि पवन क्षिति नीर आकाशा। १४८ अग्नि तत्व स्वर ऊपर बहई। तीक्ष्ण चाल पवन कर अहई। १४६	   설
सतनाम	अग्नि तत्व स्वर ऊपर बहई। तीक्ष्ण चाल पवन कर अहई।१४६	<del>-</del>   크
	पृथ्वी सोहे चले चकोरा। नीचे बहे नीर तत्व जोरा।१५०	
<b>सतनाम</b>	क्षण बामे क्षण दाहिने बासा। दोनों स्वर चले सो तत्व आकाशा।१५१ पांचो तत्व चले स्वर माहीं। पारखा अहै साधु जन पाहीं।१५२	·   섥
सत	पांचो तत्व चले स्वर माहीं। पारखा अहै साधु जन पाहीं।१५२	니井
	साखी - २०	
सतनाम	अग्नि श्याम हरियर पवन, पृथ्वी पीत रंग होय।	सतनाम
सत	अरुण नीर आकाश तत्व, श्वेत वर्ण है सोय।।	긜
	चौपाई	
सतनाम	पांच तत्व कर इन्द्री पाँचा। भयऊ बचन यह मानहु साँचा।१५३	सतनाम
संत	अग्नि तत्व से नयन प्रकाशा। लोभ मोह तहाँ करे निवासा।१५४	큨
	नासिका पवन तत्व से भयऊ। गन्ध सुगन्ध बास तिन्हि पयऊ।१५५	
सतनाम	पृथ्वी तत्व कर मुखा भौ आई। भोजन अँवचन ताकर भाई।१५६ रसना लिंग नीर तत्व अहर्ड। मैथान कर्म स्वाद सो लहर्ड।१५७	<del> </del> 범건
표	रसना लिंग नीर तत्व अहई। मैथुन कर्म स्वाद सो लहई।१५७	ᅵᆿ
Ļ	तत्व आकाश से श्रवण बनावा। शब्द कुशब्द सुनन कहँ पावा।१५८	
तनाम	चित्त में अग्नि नाभि में पवना। कहहु सो लखहु जहाँ रहु जवना।१५६	
<u>ਜ</u> ਰ	पृथ्वी हृदय नीर तत्व भाला। तत्व आकाश शीश में डाला।१६०	ᅵᆿ
Ļ	साखी – २१	서
सतनाम	कान नाक मुख आँख श्रुति, पाँचो मुद्रा साँच।	सतनाम
	गोचरि खेचरि भोचरि, चंचरी उनमुनि पाँच।।	=
   	चौपाई	4
सतनाम	तत्व एक तेहि पाँच प्रकृती। लखाहिं साधु जन ताकर वृत्ती।१६१	
	अस्ति मेद रोम त्वचा नारी। पृथ्वी तत्व से पाँच सुधारी।१६२	1
  王	रक्त वीर्य पित्ता लार पसीना। नीर तत्व से भायऊ नवीना।१६३	 설
सतनाम	आलस्य त्रिषा नींद भूखा तेजा। अग्नि तत्व से पाँच सहेजा।१६४	114
	चलन गान बल सकुच विवादा। पवन तत्व कर एहि मर्यादा।१६५ लोभ मोह शंका डर लाजा। तत्व आकाश कर सकल समाजा।१६६ रजगुण अग्नि तमोगुण वायु। सतगुण पृथ्वी नीर स्वभाऊ।१६७	
गम	लोभ मोह शंका डर लाजा। तत्व आकाश कर सकल समाजा।१६६	   <mark>최</mark>
सतनाम	रजगुण अग्नि तमोगुण वायु। सतगुण पृथ्वी नीर स्वभाऊ।१६७	
	9	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	<u> गम</u>

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	— म
	अधिक पाँच से भयऊ पचीसा। तीन गुण मिलि तीस तैंतीसा।१६८।	
표	साखी – २२	섥
सतनाम	पाँच तत्व की कोठरी, तामे जाल जंजाल।	सतनाम
	जीव तहाँ बासा करे, निपट नगीचिहं काल।।	
표	चौपाई	섥
सतनाम	आँखा नाक जिभ्या त्वचा काना। पाँचो इन्द्री ज्ञान प्रधाना।१६६।	सतनाम
	कर पगु लिंग गुदा मुखा होई। पाँचों इन्द्री कर्म समोई।१७०।	
ᆁ	यह दस इन्द्री कर परकारा। बूझहू पण्डित करहु विचारा।१७१। मन एकादस सब कर राजा। जो जीते सो साधु समाजा।१७२।	섞
सतनाम		
	पाँच पचीस सबै बस होई। मन इन्द्री कहँ जीते सोई।१७३।	
틸	सो मन रहु ब्रह्मा के पासा। सो मन शिव संग करे विलासा।१७४। सो मन राम कृष्ण संग रहेऊ। सुर नर मुनि कोई पार न लहेऊ।१७५।	섞
सतनाम		
	सो मन चारि वेद बिस्तारा। सो मन ब्यास ग्रन्थ अनुसारा।१७६।	
ᆁ	साखी - २३	생
सतनाम	सो मन तीनों लोक महँ, काहु परा नहिं चीन्ह।	सतनाम
	धन्य साहब सतगुरु धनी, मोहिं लखाय जो दीन्ह।।	
तनाम	चौपाई	सतन
सत		五
	एक मास पक्ष दुइ समोई। कृष्ण पक्ष सूर्य कर होई।१७८।	
सतनाम	एक मास पक्ष दुइ समाइ। कृष्ण पक्ष सूथ कर हाइ।१७८। परिवा दूजि तीजि लगि भानू। तिथि चन्द भानु तिथि जानू।१७६। शुक्ल पक्ष चंदा कर बासा। तिजे तिथि लगि चंद प्रकाश।१८०।	सत्
- - HG		
	तिथि सूर्य तिथि है चन्दा। एहि विधि स्वर दुवो करहिं आनंदा।१८१।	
सतनाम	सोमवार बुद्ध गुरु शुक्र जानी। चन्दा के दिन चारि बखानी।१८२। रवि शनि मंगल तीनों बारा। सूर्य के दिन करहु बिचारा।१८३।	सत्
- - 됐		
	थिर चर कारज दुइ जग माहीं। चर सूर्य थिर चन्दा पाहीं।१८४।	
सतनाम	साखी – २४	सतनाम
Ή	थिर कारज को चन्द है, चर कारज कहँ भानु।	귤
	तत्व को पारख पाय के, जगत् कार्य करि जानु।। चौपाई	ا
सतनाम	वापाइ भूषण बसन विवाह विधाना। औषधि प्रीति योग अरु ध्याना।१८५।	सतनाम
Ŭ.	न्य असम् विपार विवासी। आयाव श्रीति वाम अरु व्यासी। १८१।	표
   स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_ म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>म</u>
	ग्रन्थ लिखों घर महल बनावे। बाग बाटिका कूप खाोदावे।१८६।	
旦	गढ़पति होय सो गढ़ में जाई। बोए अनाज किसान बनाई।१८७।	1
सतनाम	बामें स्वर में सुफल सँवारा। यह सब थीर कारज संसारा।१८८।	सतनाम
	चर कारज कछु कहों बखानी। दहिने स्वर में यह सब ठानी।१८६।	-
ᆈ	लेन देन औ भोजन करई। विद्या पढ़े बही लिखा धरई।१६०।	4
सतनाम	हित अनहित चाहे तहँ जाई। युद्ध करे कछु मांगे भाई।१६१।	सतनाम
B	वाहन मोल लेई हथियारा। भोग नहान न्याय अनुसारा।१६२।	4
┎	साखी - २५	세
सतनाम	पूरब उत्तर जाइये, दिहने स्वर प्रवेश।	सतनाम
F	बामें स्वर को यात्रा, दक्षिण पश्चिम देश।।	표
	जो स्वर चले सोई प्गु, पहिले राखु संभारि।	
सतनाम	तीनि डेग है भानु को, चन्दा के पगु चारि।।	सतनाम
THE STATE OF THE S	चौपाई	표
	पुथ्वी नीर तत्व दुइ अहई। थिर चर कारज दूइ सब लहई।१६३।	١.
सतनाम	शुक्ल पक्ष मधुमास सोहावा। कृष्ण पक्ष सब बीति बितावा।१६४।	सतनाम
계	परिवा प्रातिहं करे विचारा। चले कवन सुर तत्व निहारा।१६५।	<b> </b> 쿸
	जो चन्दा में पृथ्वी बहई। संबत सान नीके सो अहई।१६६।	
<u> </u>	नीर चलत जो इंगला माहीं। उत्तम संबत सो चिल जाहीं।१६७।	स्तन
뒢	नीर अवनि पिंगला प्रकासा। दुक मिद्धम होय बारह मासा।१६८।	쿨
	अग्नि वायु तत्व दिहने सूरा। परे अकाल जल होय न पूरा।१६६।	
सतनाम	तत्व अकाश चले स्वर दोई। अन्न न उपजे दुर्भिक्ष होई।२००।	सतनाम
표	साखी - २६	불
	संबत भर को फल कहों जेहि तत्व भेद लखाए।	
뒠	प्रगट कहों स्वरोदय में, चाल रंग समुझाय।।	섥
सतनाम	सोरठा - ३	सतनाम
	गर्भवती जो कोय, औचक पूछै आनि जौ।	
틸	दहिने बेटा होय, बामें स्वर कन्या कही।।	섥
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	जो पूछे ताकर स्वर सोई। चेले तो कुशल छेम सब होई।२०१।	
囯	अनिमल स्वाँस न मिलै ठिकाना। तहाँ हानि कछु निश्चय जाना।२०२।	섥
सतनाम		सतनाम
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	<u> </u>
	पूरन दोउ कर दोउ स्वर बहई। दुइ सुत होय स्वरोदय कहई।२०३।	
텔	जो प्रसंग कछु पूछे कोई। करहु विचार स्वाँस में सोई।२०४।	4
सतनाम	चन्दा चलत जो पूछे आई। लगन बार तिथि योग सोहाई।२०५।	सतनाम
	बायें सो ऊँचे होय कहई। जानहु सुफल कार्य सो अहई।२०६।	
सतनाम	नीचे पीछे दिहने ओरा। सुर दाहिने कोई पूछे तोरा।२०७। लगन वार तिथि योग ठिकाना। शुभ कार्य निश्चय परवाना।२०८।	<b>삼</b>
सत्	लगन वार तिथि योग ठिकाना। शुभ कार्य निश्चय परवाना।२०८।	크
	साखी - २७	
सतनाम	योग लगन तिथि बार पक्ष, मिलै सो पूरन काज।	सतनाम
H 대	इन्ह महँ दुइ एक ना मिलै, तस तस मिद्धम साज।।	큠
	सोरठा - ४	
सतनाम	कोई कतहीं मत जाय, सुखमिन के प्रकाश में।	सतनाम
堀	ज्ञान ध्यान लवलाय, जगत् कार्य कहँ हानि है।	量
	चौपाई	
सतनाम	वृष्चिक सिंध वृष कुंभ पुनीता। चारि राशि चन्दा कर हीता।२०६।	सतनाम
ᅰ	कर्क मेष मकर औ तूला। चारि राशि भानु कर मूला।२१०।	쿨
	कन्या मीन मिथुन धन चारी। कष्ट भाव सुखामना नारी।२११।	
तनाम	कृष्ण पक्ष परिवा कहँ भानू। प्रातिहं चले लाभ कछु जानू।२१२।	सतन
색	शुक्ल पक्ष परिवा कहँ चन्दा। भोरहिं बहे सो परम अनन्दा।२१३।	크
	मास एक पक्षा दुई अहई। अनिमल चले हानि कछु लहई।२१४।	لم
सतनाम	प्रातिहं परिवा सुखामन जाना। सो पक्ष हानि कलह अनुमाना।२१५।	सतनाम
平	लखों साधु जन भेद विचारी। ज्ञान गमी जब भए उजियारी।२१६।	ㅋ
표	साखी - २८	샘
सतनाम	का इंगला का पिंगला, कवनों स्वर एक होय।	सतनाम
	बहते स्वर पूछै कोई, पूछे ताकर स्वर सोय।।	"
  王	सोरटा - ५	4
सतनाम	कार्य पूरन हो, पूछै पूरन वो रही।	सतनाम
	स्वर दुनो कहं जो, आपन पूछे ताहु कर।।	
핔	चौपाई	<u></u>
सतनाम	अहे स्वरोदय बहुत विस्तारा। ज्ञानी जन निजु करिहं विचारा।२१७।	सतनाम
		] <sup>^</sup>
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	 ाम
	अल्प भेद स्वर कहा बखानी। थोरिहं में समुझे कोई ज्ञानी।२१८	
上	आठ जाम पिंगला परगासा। तीनि वर्ष में काया विनासा।२१६	섴
सतनाम	आठ जाम पिंगला परगासा। तीनि वर्ष में काया विनासा।२१६ ताकर दुगुना सो स्वर बहई। युगल वर्ष काया तब रहई।२२०	111
"	उदय भानु जो होय पखावारा। अब जीवन षट मास विचारा।२२१	
上	रैनि चन्द बासर होय सूरा। एहि विधि उगे मास एक पूरा।२२२	섴
सतनाम	रैनि चन्द बासर होय सूरा। एहि विधि उगे मास एक पूरा।२२२ जीवन मास षट करहु विचारी। भेद स्वरोदय लेहु निरुआरी।२२३	11
ľ	मास एक स्वर पिंगला बहई। अब दुइ दिन का जीवन अहई।२२४	
 E	साखी – २ <del>६</del>	섥
सतनाम	गंगा यमुना सरस्वती, तीनों परि गयो रेत।	सतनाम
	मुख से स्वांसा चलत है, काया विनासन हेत।।	'
E	चौपाई	섥
सतनाम	चन्दा निश दिन होय प्रकासा। दिवस चारि करु एहि विधि बासा।२२५	सतनाम
	दिन सहस्त्र में काया विगोई। बचन स्वरोदय मिथ्या न होई।२२६	
E	यस यस चन्द उदै अधिकाना। तहाँ काल निकट निहं आना।२२७	섥
सतनाम	वासर बीस उदै होय चन्दा। पूरन आरबल परम अनन्दा।२२८	
	एक जाम सुखामना प्रकाश। निश्चय जानहु काया विनाशा।२२६	
<u>नाम</u>	रजनी पिंगला बहे सुधारा। वासर इंगला करु पैसारा।२३०	섥
सत्	हंस गवन को दुरि संयोगा। काया सुखा तनु व्यापु न रोग।२३१	111
	धुव मण्डल निहं दरसे आई। दुइ पक्ष ऊपर काया नसाई।२३२	
E	पवन साधना योगी करई। अंजहु काया पतन होय मरई।२३३	섥
सतनाम	साखी – ३०	सतनाम
	काया पतन सबकी भई, रुधिर नीर को अंग।	
围	जरा मरन को देश है, भविनिधि विखम तरंग।।	섥
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	पाँच तत्व यह जेहि विधि भयऊ। बिरला जन कोई पारष पयऊ।२३४	
E	तत्व अकाश सबिन्ह को मूला। तासो चार तत्व समतूला।२३५	섥
सतनाम	पवन आकाश तत्व से होई। पवन से अग्नि तत्व भव सोई।२३६	-1-4
	पावक से जल भये प्रकाशा। जल से पृथ्वी तत्व सुनु दासा।२३७	
围	प्रेम मगन से सभे दीखाई। बिनु देखे नहिं कोई पतिआइ।२३८	섥
सतनाम	जैसे कछुआ सिमिट समाना। आपु में आपु देख दिल माना।२३६	सतनाम
	13	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	ाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	— म
	इश्क प्रेम धन जीवन सारा। साहब सतगुरु भयऊ हमारा।२४०।	
सतनाम	नरक स्वर्ग की सुधि बिसराई। तन मन वारि सभे कछु पाई।२४१।	
쟆	साखी – ३१	חויווי
	सतपुरुष के मिलन से, नैन भया खुशहाल।	
सतनाम	दिल मन मतवाला हुआ, गूँगा गहिर रिशाल।।	מויווי
F F	चौपाई	
_	यह भव शोक सभे बिसराई। कामिनि कनक ना कर फैलाई।२४२।	1
선디니티	तब मैं आपु आपु में देखा। समुझि परा मोहिं सकल विशेषा।२४३।	14
环	मैं फरजंद पुरुष सत केरा। रोशन दिल चिराग है मेरा।२४४।	
┢	जस मैं तस मैं देखु विचारी। सुझे ना बिनु दीपक अंधियारी।२४५।	
सतनाम	केहि कारण भूला तुम रहहू। एहि भव शोक महा दुःख सहहू।२४६।	12
	देखाहि नजरी करी अनुमाना। लीला जाकर युगल जहाना।२४७।	
王	बादशाह सोइ साहब मेरा। दुनियाँ दीन दुनों तेहि केरा।२४८।	
सतनाम	तन तुम्हार जिन्हि सकल बनावा। दुई जहान जग सुभग सोहावा।२४६। साखी - ३२	4011
	गहिर भेद यह कहत हों, जीव कृतारथ होत।	
4	बुझहु विवेक बिचारि के, अब जिन रहहू अचेत।।	4101
संतनाम	चौपाई	1 1 1
	तन सरवर है युगल जहाना। दहिने बाये भाँति दुइ जाना।२५०।	
सतनाम	दुइ पगु दुइ कर पल्लव पाँती। नासा श्रवन नैन दुइ भाँती।२५१।	4011
Ή	रद मुखा दशन कपाल उरेहा। इमि दुइ भाँतिन सरबस देहा।२५२।	=
	दुइ जहान एहि भाँति विशाला। तामें जल थल सप्त पताला।२५३।	
सतनाम	पद पताल शीस असमाना। मध्य भवसागर अवनि समाना।२५४।	4011
巫	माटी मासु रक्त सोइ नीरा। नदी नार रंग शकल शरीरा।२५५।	1
  ਜ	दिल गरकाब सिन्धु अनुमानी। गिरिवर तन में अस्थि बखानी।२५६।	1
सतनाम	रोम बार तन ऊपर पसारा। बन उपवन वाटिका सँवारा।२५७।	4011
	साखी - ३३	
国	दरिया भेदहिं जानिये, यह तो काया ब्रह्मण्ड।	4
सतनाम	सात गिरह नव टूक तन, सात द्विप नव खण्ड।।	4111
	14	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>म</u>
Ш	सोरठा - ६	
巨	काया मसाला चारि, गंज भेद दिल जानिये।	<u> </u>
सतनाम	ज्ञान स्वरोदय विचारि, ज्ञानी होय सो गुण लहै।।	सतनाम
Ш	चौपाई	
팉	पुल समान नासिका अहई। आवत जात स्वाँस में रहई।२५८।	섥
सतनाम	पुल समान नासिका अहर्इ। आवत जात स्वाँस में रहई।२५८। मेहर तराजू भौहें बनावा। तेहि दुइ पलरा नैन लगावा।२५६।	1
Ш	दोउ दम चाँद सूर्य नित चलहीं। तारा गण ललाट में रहहीं।२६०।	
E	। श्रमकन होय झलकि तन आवे। बुझे भेद जो गमि करि पावे।२६१।	स्त
सतनाम	श्रमकन होय झलिक तन आवे। बुझे भेद जो गिम किर पावे।२६१। जागत रहहु सो दिन है भाई। सोय रहहु सो निशि भौ आई।२६२।	14
Ш	खुश दिल तेरा सो भयऊ बिहाना। दिल में शोक साँझ सोइ जाना।२६३।	
剈		
सतनाम्	स्वर्ग नर्क दुवो लेहु बिचारी। सुखा है स्वर्ग नर्क दुःखा भारी।२६४। जो नहिं रोग शोक दुःख लहई। एहि तेजि स्वर्ग बिहिश्त का चहई।२६५।	크
Ш	साखी - ३४	
सतनाम	दिल समुद्र घन शोक है, सूँढ़ विवेक समीर।	सतनाम
괢	ले जल ऊपर घैचिया, बरसत नैनहिं नीर।।	큪
Ш	चौपाई चौपाई	
크	। बिरह विवेक सो वर्षा होई। बिहसहिं दामिनि दमके सोई।२६६।	सतन
ᅰ	।  हँसहु ठठाया सो घन घहराना। उदय अस्त ले सब केहु जाना।२६७।	
Ш	जो पल स्वाँस चले तन माहीं। दिन पक्ष मास वर्ष युग जाहीं।२६८।	
सतनाम	जब जीवहिं यमराज सतावा। तबहिं कल्प भय प्रलय जनावा।२६६।	सतनाम
ᅰ	। धन-धन साहब सिरजनि हारा। बुन्द एक जल सृष्टि सँवारा।२७०।	귤
	युगल जहाँन काया जिन्हि कीन्हाँ। तामें सब यह उपमा दीन्हाँ।२७१।	
सतनाम	। अ काबा किबिला सब निजु हेरा। मुलुक महम्मद दिल है तेरा।२७२।	सतनाम
ĮĒ	ु ७७   रसना नैन नासिका काना। प्रथम काया संग चारि प्रधाना।२७३।	크
	साखी – ३५	اير
सतनाम	एही किताबें चारि हैं, कहे ओलि कोई जानि।	सतनाम
吊	तौरेज अंजील है, औ जमूर फूरकान।।	ㅂ
ᇤ	चौपाई 	세
सतनाम	एहि नबी कर चारो यारा। औवल असल पीर है चारा।२७४।	सतनाम
	15	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_  म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	—  म
	एही तरीकत चारो जानी। एही वजीफा चारि बखानी।२७५	
릨	एहि फिरिश्ता चारि कहाया। एहि चारि खम्भा तन लाया।२७६	स्त
सतनाम	एही चारि चारो अंश सोहावा। खाक बाव यह आतश आवा।२७७	सतनाम
	एही चारि वेद पहचानो। ऋग यजु साम अथरवेद जानो।२७८	
सतनाम	एही चतुर्मुखा ब्रह्मा होई। एही चारि मुद्रा है सोई।२७६	섥
संत	पावक अविन पवन औ पानी। चारो तत्व एही कहँ जानी।२८०	सतनाम
	एही चारि है चारिउ कोना। एहि में खाक एही में सोना।२८१	
सतनाम	साखी – ३६	सतनाम
덒	दरिया तन से निहं जुदा, सब कछु तन के मािहं।	쿸
	योग युक्ति से पाइये, बिना युक्ति कछु नाहिं।।	
सतनाम	चौपाई	सतनाम
\.	जो कोई युक्ति योग में आवे। दीदम दीद देखि सो पावे।२८२	큠
	तीनि लोक यह तन के माहीं। ढूँढत अन्त मिला कछु नाहिं।२८३	
सतनाम	धन्य कारीगर जिन्हि सिरजि सँवारा। मानुष तन सब ऊपर सारा।२८४	सतनाम
<b>Ä</b>	होहु स्वरोदय तुम साहब केरा। अलख ब्रह्म गुण भेद बसेरा।२८५	<b>코</b>
╻	तुमिहं सुभग मकुर हो भाई। तोहि में साहब सुरित दिखाई।२८६	لم
तनाम	तै पंछी तेहि अजर अमाना। सैल करत यहाँ आय भुलाना।२८७	सतना
표	गाफिल आन परा केहि हेतू। देखु आपु होय आपु सचेतू।२८८	큠
╻	तजहु गफलत लहहु बड़ाई। अब जिन एहि भव रहहु भुलाई।२८६	샘
सतनाम	साखी – ३७	सतनाम
	खास आपने मुख कहा, नबी से अल्लह विचारि।	"
臣	बुजुरुग आदम जात है, जीव चराचर झारि।।	쇠
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	युक्ति योग मानुष तन माहीं। कस्तूरी गुण दिल तेहि पाहीं।२६०	Γ
틸	अकिल वजीर साथ करि दीन्हा। दर्श दीदार आँख दुइ कीन्हा।२६१	섥
सतनाम	नाम उचारन जिह्नवा सँवारी। सुनन नाम गुण श्रवण सुधारी।२६२	सतनाम
	घाणि नासिका अजब सोहावा। पाँच सीप मनि पाँचहु पावा।२६३	
सतनाम	है हदीस में नबी बखाना। हाफिज फाजिल हो सो जाना।२६४	섬
सत	पाक मोम दिल बन्दा तेरा। कहा अल्लाह असर है मेरा।२६५	सतनाम
	16	_
Γ <sub>41</sub> ,	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	IH.

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u> </u>
П	बहुत ऊँच पदवी तुम पावा। दिल तुम्हार रब के मन भावा।२६६।	
सतनाम		सतनाम
	काम क्रोध मद लोभ जत, गर्व गरूरी झारि।	
सतनाम	विमल प्रेम मिन बारि के, राखहु दिल उजियार।। चौपाई	सतनाम
П	बादशाह रब दोनों जहाना। तासो मिलि रहु अबहिं मिलाना।२६८।	
सतनाम	का भुलिन्ह सँग रहहु भुलाई। ज्ञानी जन कहँ दुःख निहं भाई।२६६। सिंह करे लोमिर सँग प्रीति। मर्द करे हिजरिन्ह से रीती।३००।	सतनाम
П	आपन मान मर्याद गँवाई। अस कुसंग करि अपयश पाई।३०१।	
सतनाम	सिंह ठवन्हिं रहु सिंहन्हि पासा। मर्द मर्द संग मजलिस बासा।३०२। प्रेम पन्थ पर तन मन वारो। यार मिलन की राह सँवारो।३०३।	सतनाम
П	जब हो प्रकट प्रेम दिल माहीं। तब मगु पूछहँ सतगुरु पाहीं।३०४।	
सतनाम	सोई देखावहिं सकल ठिकाना। आपु में आपु मकान अपाना।३०५।	
	पाला – २८	"
王	जैसे अनुभव किछु कहीं, सुने काहू से कोय।।	석
सतनाम	आपु कबहिं देखा नहिं, जानै चहत है सोय।।	सतनाम
	चापाइ	
Ħ	किमि कर पावे ठौर ठिकाना। अनुभव जगह चाहे कोई जाना।३०६।	섬
सतनाम	रहबर मिले तो पहुँचे जाई। जिन्हि देखा सो देहिं दिखाई।३०७। जैसे बीज जमी में परई। समय सजीवन जाय अकुंराई।३०८।	सतनाम
П	जित बाज जना न परशा समय सजायन जाप जन्मुराशाहण्या। जिकोई मदद न करें सहाई। निष्फल जाय फले नहिं भाई।३०६।	
सतनाम	तेहि विधि प्रेम हृदय में होई। बिन सतगुरु फल लहे न कोई।३१०।	सतनाम
Ή	प्रिथम प्रेम मगु मोहकम पाऊँ। यार मिलन कर खोजहु ठाँऊँ।३११।	큠
  ⊾	पहिले सतगुरु सो कर प्रीति। सत बचन मानहु प्रतीती।३१२।	
सतनाम	। इश्क प्रेम पंथ बड़ कठिनाई। ठग बटवार लगा बहु भाई।३१३।	सतनाम
	साखी - ४०	"
且	दरिया डरु मत ताहि से, ज्ञान बान तोहि पास।	섥
सतनाम	मदद वेवाहा शाह का, ठग बटवारन्हि नाश।।	सतनाम
	17	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	<u>म</u>

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	<u> </u>
	एक भरोसा एक बल, एक आश विश्वास।	
<u> </u>	एक भरोसा नाम कर, जाचक तुलसीदास।।	1111
सतनाम	चौपाई	רוויווא
	बुझहु तुलसी कर यह साखी। पतिव्रता एक पति चित्त राखी।३१४।	
सतनाम	यह जग वेश्या बहुत भतारी। एक भिक्त करु तन मन वारी।३१५।	ব্যব্যান
सत	एकै नाम आश चित्त धरहू। दूजा दोविधा सब परिहरहू।३१६।	1
	एके ब्रह्म सकल घट बासी। वेद कितेब दोनों प्रकाशी।३१७।	
सतनाम	धोनु अनेक वर्ण जीव जानी। क्षीर श्वेत एक रंग बखाानी।३१८। जो कोई सुने अचम्भा करई। वृक्षा एक सब मेवा फरई।३१६।	4101
재미	जो कोई सुने अचम्भा करई। वृक्ष एक सब मेवा फरई।३१६।	1
	कत मीठा कत खाट्टा कसेला। कत कडुआ तीता कत मेला।३२०।	
सतनाम	कत विष कत अमृत सम सोई। देखाहु करि विचार जग होई।३२१। साखी – ४१	4101
꾟	साखी – ४१	1
	जैसे स्वाती बूँद से, कत उपजे संसार।	
सतनाम	बिलग बिलग सब जानिये, गुण कीमति विस्तार।।	4011
Ţ.	चौपाई	<b>王</b>
F	सीप सिन्धु में मोती भयऊ। गज मस्तक गज मुक्ता पयऊ।३२२।	1
सतनाम	केदलि कपूर सुगन्ध कहावे। बेनु वंशलोचन होय आवे।३२३।	
₽,	अहि मुख विष गरल भौ आई। एहि विधि सकल जीव समुझाई।३२४।	1
표	एक बूँद से सब संसारा। भयऊ चौरासी लक्ष पसारा।३२५।	1
सतनाम	स्वाती अमर पुरुष निज मूला। यहाँ आय भव सब कोई भूला।३२६।	सतनाम
	जहाँ तहाँ ढूंढ़ै सब कोई। आपु में आपु सूझे नहिं सोई।३२७।	
王	जैसे मृगमद है मृग पासा। आफ न चिन्हे टडढ़त घासा।३२८।	4
सतनाम	आगे पिछे दौरि सो जाई। कहाँ से घ्राणि वासना आई।३२६।	संतनाम
	साखी - ४२	
크	है खुसबोई पास में, जानि परे नहिं कोय।	4
सतनाम	भर्म लगे भटका फिरे, तीर्थ व्रत सब कोय।।	सतनाम
	अम्बर लगा काया में, मिह मंडल के पार।	
सतनाम	सुरति डोरि कहँ चेतिये, ज्यों मकरी महँ तार।।	सतनाम
सत		1 1 1
<u>.</u>	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	
71	Mari Maria Maria Maria Maria Maria Maria	, II

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	<u>—</u> म
	प्रेम धागा अति सुबुक है, सुन्दर साधन ऐत।	
冒	ज्यों मकरी महि तार परि, टूटे परा अचेत।।	ජ 건
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	जो तुम आपन घर चहहू। आपु में आप देखु मिलि रहहू।३३०।	
सतनाम	जियतिहं मुक्ति होय तब साँचा। मुए चौरासी कह होय नाँचा।३३१।	सतनाम
뒢	तब नहिं यार मिलन संयोगा। एहि भव चौरासी बड़ सोगा।३३२।	1
	जग से निकलि रहहु मैदाना। बदी बुराई तजहु जहाना।३३३।	
सतनाम	सब तोहिं पास जुदा कछु नाहीं। मानुष तन अनूप जग माहीं।३३४।	सतनाम
뒉	साहब भोद स्वरोदय बतावा। गोप युक्ति कहि प्रकट जनावा।३३५।	1
	पाप पुण्य आशा बिसराहू। अजपा सो ऽहं सुरति समाहू।३३६।	1
सतनाम	जाति वर्ण कुल देह कर नाता। मुए परा झिर तरुवर पाता।३३७।	सतनाम
F	काया माया सकल पसारा। बिलिंग बिहरि होय रहहु निनारा।३३८। सन्त महिमा कछु निहं निहं जाई। सुभग मनोहर सुन्दरताई।३३६।	1
ᆈ	सर्वा नाल्ना अर्थु गाल गाल जाइ। सुनग नगालर सुग्परवाइ।२२८। छन्द	١.,
सतनाम	सुन्दर मनोहर मधुर मूर्ति, अलख अजर अमान की।	सतनाम
	प्रति रोम कोटिन राम उपमा, जिमि खदोतिहें भानु की।।१।।	"
- 비	यमकाल अवसि त्रिकाल जिमि, सतकोट बल पंचान की।	삼
सतन	रक्षपाल जिमि नर कहेरी, सत कोटि सम जन मान की।।२।।	निम
	सत कोटि स्वर्ग पताल ते, अति दूरि जग अभिमान की।	
目	जन के निकट जिमि नैन कहं, समकोटि पलक सयान की।।३।।	삼
सतनाम	निर्गुण सर्गुण के शीश पर, पद छत्र कृपानिधान की।	सतनाम
	दरिया कहें सतगुरु सुमिरि रहु, शरण तेहि निर्वान की।।४।।	
सतनाम	साखी - ४३	सतनाम
ᅰ	दरिया दिल दियाव है, अगम अपार वे अन्त।	큠
	सब में तू तोहिं में सब, जानु मर्म कोई सन्त।।	
सतनाम	दरियानामा फारसी, पहिले कहा किताब।	सतनाम
<del> </del>	सो गुण कहा स्वरोदय में गहिर ज्ञान गरकाब।।	귤
	ग्रन्थ ज्ञान स्वरोदय पूर्ण	<b>LV</b>
सतनाम		सतनाम
B	19	<b>#</b>
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>,</u> म